प्रात सभा 5-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बच्चे भी समझते हैं श्रीमत पर भारत में आदी-सनातन-देवी-देवता धर्म की स्थापन कर रहे हैं। क्योंकि वह धर्म प्रायः लोप हो गया है और उनके बदली आदी-सनातनहिन्दु धर्म समझ लिया है। जानते तो हैं कुछ भी नहीं। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को न जानने कारण, भक्ति मार्ग होने कारण उन्हों को पत्थर बुधि कहा जाता है। आदी सनातन देवी देवता धर्म पूज्य था जो प्रायः अभी लोप है। यह कोई भी नहीं जानते। बटाला से समाचार आया था सनातन धर्म वाले कहते हैं आप आदी सनातन धर्म को मानते नहीं हो। परन्तु तुम तो आदी सनातन देवी-देवता धर्म की ही स्थापना कर रहे हो। एमआबजेक्ट यह सामने खड़ी है। आदी सनातन तो यह देवी-देवताएं ही थे ना। परन्तु पत्थर बुधि है ना। संगदोष में आकर कुछ न कुछ बोल देते हैं। बच्चे भी सिर्फ समाचार दे देते हैं। अपना विचार नहीं लिखते हैं। समझाना चाहिए नासतयुग में यह आदी सनातन देवी देवता धर्म था ना। अभी नहीं है। अभी तो कलियुग है। जिसका विनाश होना है। अभी है कलियुग अन्त और सतयुग आदि का संगम। जब कि स्थापना और विनाश होती है। बच्चों करिसपान्ड तो देना है ना। चित्र तो यह सभी के पास हैं। बोलो आओ तो हम आप को समझावें श्रीमत पर आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापनाफिर से प्रजापिता ब्रह्मा कुमार कुमारियाँ कर रही हैं। यह तुम बैठ समझो। अथवा तुम उन्हों को चिट्ठी में भी लिख सकते हो। जाती बात तो करनी नहीं है। तुम बच्चों को ही यह समझ है हमविश्व में आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। यह तो हरेक कीबुधि में अच्छी रीत रहना चाहिए। अगर बुधि में यह नहीं है तो फिर अशांत ही फैलाते हैं। खुद अशांत होना और एक दो भीअशांत करना असुरों का काम है। कलियुग में ही यह धंधा आद करते हैं। अभी तुमको शिक्षा मिलती है। तुम ही भारत में 21 जन्म लिए विश्व में शांति का धर्म स्थापन कर रहे हो। अगर कोई अशांति में रहते हैं तो साहबज़ादे वा ब्राहमण उनको नहींकहेंगे। भल यहां है परन्तु अशांति कितनी फैलाते हैं। तो गोया शुद्र सम्प्रदायहै। वह इतना पद पा न सके। विघ्न ही डालते रहते हैं। और फिर जो देह अभिमान में रहअशांति डालते हैंतो वह भी भूत है। वह कोईदेवता धर्म की स्थापना नहीं करते हैं। और ही बिघ्न डालते हैं। परन्तु वह बुधि कहां। माया एकदम नशा ही गुम कर देती है। अभी तुम समझते हो हम शिव बाबा की श्रीमत पर विश्व में आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापन कर रहे हैं। हम ही देवता थे। फिर 84 जन्मों के बाद आकर फिर बाप के बच्चे बने हैं। बाप समझाते हैं तुमबच्चे ही निमित बनते हो विश्व में 100% आदी सनातन धर्म की स्थापना करने लिए। परन्तु यहां तुम्हारे पास अथवा सेन्टरस में कितनी अशांति रहती है। तो समझना चाहिएहम साहिबज़ादे नहीं हैं। हम तो हरामज़ादे हैं। आपस में थोड़ा भी लड़े तो समझना चाहिए यह तो हम अशांति फैलाते हैं। बाप तो ठीक ही समझाते हैं ना। जिन में कोई भी चोरी या झूठ की, अशांति फैलाने की आदत है उनको क्या कहेंगे। 5विकार हैतो अशांति होती है। वह जैसे कि उस दुनियाके हो गये। बैठे भल यहां हैं परन्तु है उस दुनिया के। यहतो बुधि में आना चाहिए ना हम विश्व में शांति स्थापन कर रहे हैं। फिर हम अशांत कैसे हैं। यह तो हमारे में भूत है। हमारे में भी भूत आ जाये यह तो अज्ञान है। उनको ही कहा जाता है सद्गुरु के निन्दक ठौर न पाये। उनको शांतिसुख का राज-भाग मिल न सकें। जो अशांत होते हैं और दूसरों को भी अशांत करते हैं, डिससर्विस करते हैं तो और ही दण्ड पड़ जाता है। मायाने बिल्कुल ही बेसमझ बना दिया है। बाप संगमयुग पर तुमको कितना समझदार बनाते हैं। अभी यह भूलना न चाहिए। तुम तो विश्व मेंशान्ति स्थापन कर रहे हो ना। कहते हो हम विश्व के मालिक बनेंगे। अगर भूत होगा तो तुम विश्व के मालिक कैसे बनेंगे। परन्तु माया समझ को एकदम मार डालती है। बिल्कुल ही बेसमझ बना देती है। जो खुद ही अशांति फैलाते हैं तो उनका क्या पद होगा। घर के प्रजा जाकर बनेंगे। या नौकर-चाकर। उनके लिए क्या रिगार्ड रहेगा। पिछाड़ी में तुमको सभीसा० होंगे कि हम क्या बनने वाले हैं। परन्तु टाईम पूरा है।

जावेंगा फिर तुम कर क्या सकेंगे। फिर तो बहुत ही पछताना पड़ेगा। बाप बच्चों को राय देते हैं पदमापदमभाग्य-शाली बनना है तो ऐसा पुरुषार्थ करो। राजाएं ही पदमापदमभाग्यशाली बनते हैं। देवताओं के पैर में पदम दिखाते हैं ना। क्योंकि वह है नई दुनिया के मालिक। प्रजा को थोड़े ही दिखाते हैं। यह तो कर के बाबा महिमा करते हैं कि प्रजा भी कम नहीं है। यथा राजा रानी मालिक, प्रजा भी अपन को मालिक समझती है। फिर भी फर्क तो बहुत हैं ना। ऐसे मत समझो हम अन्त तक यहां ही होंगे। कोई भी समय भागन्ती हो जावेंगे। फिर निन्दा कराने वाले का और पद भ्रष्ट हो जावेंगा। समझते हैं हम अशान्ति फैलाते हैं। यहां तो बच्चों को बड़ा अटल, अडोल बनना है। कब अशान्ति न आनी चाहिए। अशान्ति वाले को अडोल थोड़े ही कहा जावेंगा। समझते हैं हम अशान्तिफैलाते हैंवह दूसरे को भी अशान्त कर देंगे। ऐसे नहीं समझना चाहिए इसने ऐसे किया तब मैं ने किया। अपन को पहले असुर समझना चाहिए। दूसरे को न देखना है। हरेक को अपनी पढ़ाई से ऊंच पद पाना है। डिस-सर्विस कर अशान्त फैलाते हैं वह तो बहुत ही दुर्गति को पाते हैं। कहां राजे-लोग, कहां प्रजा। कितना शांति का राज्यवहां होता है। महाराजा महारानीही होते हैं। वज़ीर की भी दरकार नहीं। दैवी महाराजा-महारानियों किसकी राय की दरकार नहीं रहती। वहां तो शान्ति का राज्य होता है। तो बाबा बच्चों को राय देते हैं अशान्त होना, झूठ बोलना यह बड़ा अवगुण है। सो भी फालतू झूठ बोल देते हैं। जरूरत ही नहीं रहती। सभी कुछ मिलता रहता है। सदैव तृप्त आत्मा रहना चाहिए। योग युक्त की प्रकृति दासी रहती है आटोमेटकली। बाप के साथ बड़ा दिल साफ रहना चाहिए। तब ही शाहबजादे की मुराद पूरी होती है। दिल अन्दर बाहर बहुत ही साफ रहना चाहिए। यहां बाप आते ही हैं अशान्त पतित मनुष्यों को देवता बनाने लिए। तो समझाते रहते हैं। वहां विकार कोई होता ही नहीं। वह है ही पावन दुनिया। यहां बाप आर्डीनेन्स निकालते हैं विकारों पर जीत पहन जगत जीत बनो। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। इसको कहा ही जाता है सहज याद। चक्र का भी ज्ञान बुधि में है। यह है यज्ञ। यज्ञ के फिर ब्रान्चेज भी हैं। उस में भी उपद्रव मचाना असुरों का काम है। बाप देखते हैं बहुतों को तंग करते हैं। ऐसा तो मुआ भला। अर्थात यज्ञ में न होता तो अच्छा। बहुतों को डिसटर्ब करते हैं अशान्ति फैलाते हैं। बाप के दिल पर न चढ़े तो तख्त पर भी कैसे बैठ सकेंगे। भल अपन को बच्चे समझते हैं परन्तु फिर भी उल्टा काम करते अशान्ति फैलाते हैं, अढंग चलन चलते हैं तो फिर यहां रह कर किया क्या। मुख्य है बाप की याद। याद से ही जन्म जन्मान्तरके पाप भस्म होंगे। सिवाय योगबल के हो न सके। फिर सज़ा भी बहुत खाते हैं। पद कम हो जाता है। तुम बाप से व्यापार करने, मनुष्य से देवता बनने आये हो। तो अवगुणों को निकालना चाहिए। ऐसे नहीं यह ऐसा करता है तो हम भी क्यों नहीं। जो कब दिल चढ़ न सके। ऐसे बहुत हीसेन्टर्स पर रहते हैं। अशान्ति तो क्या, गन्द भी कर देते हैं। फिर उनकी क्यागति होगी। आगे चल मर जावेंगे या निकल जावेंगे। यहां रह न सके। अवस्था बड़ीअडोल चाहिए। कमज़ोर दिल वाले थोड़े ही विनाश देख सकेंगे। मासी का घर थोड़े ही है। इसमें अवस्था बड़ी मज़बूत चाहिए। विनाश बहुत कड़ा होना है। तुम अपने सामने देखते रहेंगे कैसे रक्त की नदियां बहती हैं। पाकिस्तान से तो यह बहुत ही कड़ा मौत है। खूनी नाहक। वह तो देख भी न सके। जो शरीर छोड़ देंगे वह तो जाकर छोटे बच्चे बनेंगे। बच्चों के लिए तो कोई घबराने आद की बात ही नहीं। तो अभी समय बाकीथोड़ा है। बहुतगई ... बहुत कितनी? 5000वर्ष से बाकी 8वर्ष। फिर आगे चल कहेंगे 7वर्ष। समय थोड़ा होता जाता है। अर्थक्येक आद तो होते रहते हैं। हिलसल होती है फिर उनको ठीक-ठाक कर देते हैं। परन्तु जब बहुत अर्थक्येकस आदफ्लिस आद होते रहते हैं। तो घडी2 क्या बैठ बनावेंगे। थक कर फिर बनाना ही छोड़ देंगे। घड़ी2 होती रहेंगी तो क्या बैठ बनावेंगे। मनुष्य समझेंगे बरोबर विनाश सामने खड़ा है। सुजाग होंगे। अभी तो घोर नींद से सुजाग होनी न है। जो अशान्ति फैलाते रहते हैं उनको जागा हुआ थोड़े ही कहेंगे। माया के तूफान आते रहेंगे। तुम बच्चों को तो बड़ा अडोल रहना है। तूफान आये परन्तु तुम अडोल रहो। कोई प्रवाह नहीं।-

संशय बुधि न होना है। घबराना न है। बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों माया के तूफान तो बहुत होआवेंगे। गुलबकावली की भी कहानी है ना। माया बिल्ली आकर दीवा बुझा देती है, अशान्त कर देती है। अवस्था को डोलायमान कर देती है। हार में डाल देती है। कब तो बाप की याद में बड़े ही खुश रहते हैं। माया कब दिवाला कर देती है। राहू का ग्रहण लगा देता है। विकार में गया समझो राहू का ग्रहण बैठा। दिल में भी समझते हैं हमारे ऊपर राहू का ग्रहण बैठा हुआ है। अमृत पीते2 असुर बन जाते हैं। तो अभी बाप के बच्चे बने हो। विश्व में शांति स्थापन करते हो तो फिर अशान्त क्यों होनी चाहिए। बाप तो हर बात की सावधानी देते रहते हैं बच्चों को। सभीको प्यार से चलाओ। खिलाओ-पिलाओ। शिव बाबा के यज्ञ में कमी तो है नहीं। भण्डारा भरपूर है। बच्चों को अपनी अवस्था पर ध्यान देना है। मैं मैंया2 अवगुण है। दूसरे का नहीं देखना है। अपन को देखना है। पढ़ाई वाले को अपना ख्यालरहता है। हम इस हालत में क्या पढ पावेंगे। कोई तकलीफ होती हो तो हैड-आफिस में लिखना चाहिए। स्टुडन्ट को कोई तकलीफ होती है तो प्रिन्सीपाल को रिपोर्ट करते हैं। बाप बच्चों को समझाते रहते हैं प्रेम से चलो। खान-पान में कोई को तंग भी न करना है। दो चार रुपया जास्ती कर के खर्चा होगा। उसको देखना नहीं होता है। खान-पान में खर्चा थोड़े ही होता है। तबीयत ठीक न है तो दवाई भी करनी है। अपनी करते हैं तो औरों की भी करनी है। इसमें ढीला न होना चाहिए। यह भी समझ होनी चाहिए। स्टुडेन्ट में भी समझ होनी चाहिए तो टीचर में भी समझ होनी चाहिए। बाप कितना समझदार बनाते हैं। बहुत बहुत ही गुल2 हर्षितमुख रहना है। साहबजादों का मुख सदैव हर्षित हो। साहबजादों के मुड कब बिगर जाती है तो उस समय जैसे कि भूत देखने में आते हैं। स्टुडेन्ट लाईफ इज दी बेस्ट लाईफ गाया जाता है। वह इस समय के हैं। सब से ऊंच यह है तो बच्चे भी फर्स्ट क्लास होनी चाहिए। देखना है हम श्रीमत पर चल रहे हैं। बाप तो साधारण है बच्चों को भी साधारण रहना होता है। यह चित्र आद भी बाबा के सर्विस के लिए ही बनवाते रहते हैं। रेगजीन पर जो अभी देहली से नमूना आया था वह चित्र बाबा को बहुत पसन्द है। कहां भीले जाओ खराब होने की चीज़ नहीं। हुलास से इन चित्रों पर समझाना है। बाप को याद करना है पावन बननेलिए। तुम्हारा यह है स्टुडन्ट लाईफ। माया की पेवगशता होने कारण मनुष्यों की बुधि कितनी जट हो गई है। कहते हैं तुम आदी सनातन के बिरथ हो। अरे यहां तो आदी सनातन देवीदेवता धर्म की स्थापना हो रही है। यह सिर्फ कोई के भरकाने से कहदेते हैं। उनको यह पता नहीं है कि पुरुषोत्तम संगम युग है। तुम्हारे में भीसभी को यह याद नहीं है। यह भी याद रहे तो चेहरा और ही फर्स्ट क्लास रहे। नालेज तो मिलती है ना। जिससे तुम पदमभाग्यशाली बनते हो। तो बच्चों को खुशी बहुत होनी चाहिए। परन्तु बाहर जाने से वह खुशी रहती नहीं। परन्तु यह भी ड्रामा में पार्ट नहीं है। जो सभी सम्मुख रहे। सम्मुख रहने वालों से दूर रहने वाले बहुत ही ऊंच पद पा लेते हैं। सर्विस बच्चे तो यहां बैठ न सके। वह तो औरों का कल्याण करने भागेंगे। बाबा बच्चों को सावधान करते रहते हैं शिव बाबाको याद कर भोजन बनाना है। याद में खाना है। अगर गपोड़ा मारेंगे तो झूठ हो जावेगा। यह बाबा अपना भी सुनाते हैं। शिव बाबा को याद कर खाता हूंफिर भूल जाता हूं। शिव बाबा हमको खिलाते हैं ऐसे भी याद करता हूं। उनकागोड़ा है ना। मालिक ही खिलावेंगा। फिर भी बुधि और2 तरफ चली जाती है। सारा समय याद नहीं रहती है। फिर भी कोशिश कर शुरु में और अन्त में तो याद करो। तो भी कल्याण हो जावेगा। भोजन में भी ताकत हो जावेगी। शिवाबनमः कर भोजन शुरु कर दो। फिर पिछाड़ी में शिवाबनमः। यह युक्तियां अपने कल्याण के लिएरचनी चाहिए। पाप तो होते रहते हैं। पुण्यात्मा बनेंगी ही पिछाड़ी में। तब तक कुछ न कुछ होता रहता है। अपन को देखनाहै। किचड़ा निकाल जाना है। निकलेंगा याद की यात्रा से। कल्प2 बाप की याद में रह हो आत्मा को पवित्र बनाते हो। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को नमस्ते। (शिवबाबायाद है